''इन्द्रियों को संयमित करने की कला सीखें''

— युवाचार्य महाश्रमण

लाडनूं 29 सितम्बर।

''हमारे जीवन में इन्द्रियों का महत्त्वपूर्ण स्थान है, इन्द्रियां माध्यम हमारी इन्द्रियां बनती है। कर्ण इन्द्रिय के द्वारा हम शब्द का ज्ञान प्राप्त करते हैं, चक्षु इन्द्रिय के द्वारा रूप का ज्ञान होता है, नाक के द्वारा गंध का बोध होता है, चीभ के द्वारा स्वाद की जानकारी होती है, त्वचा के द्वारा स्पर्श होता है अगर इन्द्रियां नहीं है तो फिर ज्ञान का साधन नहीं हो सकता।''

उक्त विचार युवाचार्यश्री महाश्रमण ने जैन विश्व भारती के सुधर्मा सभा में उपस्थित धर्मसभा को संबोधित करते हुए व्यक्त किये।

युवाचार्यश्री महाश्रमण ने कहा कि इन्द्रियां ज्ञान का माध्मयम है तो इन्द्रियों के द्वारा भोग भी होता है। पांच इन्द्रियों में स्त्रोत्र और चक्षु दोनों कामी इन्द्रियां है। घ्राण, स्पर्श और चीभ ये तीन भोगी इन्द्रियां होती है। त्वचा के द्वारा भोग भोगा जाता है, जीभ के द्वारा स्वाद चखा जाता है, नासिका के द्वारा गंध का भोग भोगा जाता है वैसे ही चक्षु और स्त्रोत्र से रूप अलग है आंख अलग है देखता है पर रूप आंख के अंदर नहीं जाता वैसे ही कान में शब्द आ गए शब्द का भोग नहीं हो सकता।

युवाचार्यश्री महाश्रमण ने कहा कि इन्द्रियां अपना कार्य करती है किंतु व्यक्ति का मन उसके साथ जुड़ जाता है तो वह प्रज्ञा का हरण करने वाला हो सकता है। जिस तरह नाव पानी में तैरती है और जब हवा का वेग आता है तो वह नाव को डूबा सकती है। इसलिए यह आवश्यक है कि जिस व्यक्ति ने इन्द्रियों को संयमित कर लिया उसकी प्रज्ञा स्थित हो जाती है। साधक के लिए आवश्यक है कि साधक इन्द्रियों का संयम करने की कला को सीखने का अभ्यास करे।

युवाचार्यश्री महाश्रमण ने आज मेवाड़ क्षेत्र के कानोड़ तुलसी अमृत विद्या निकेतन से आए विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि जो विद्यार्थी आलसी व आराम करने वाला होता है तो उसको विद्या प्राप्त नहीं होती। जब विद्यार्थी परिश्रम करता है तो उसे विद्या प्राप्त होती है। आलस्य शत्रु होता जो नुकशान करने वाला होता है और परिश्रम मित्र होता है जो सफलता हासिल करवाता है।

इस अवसर पर तुलसी अमृत विद्या निकेतन के छात्रों ने सामुहिक गीत की प्रस्तुति दी। श्री सवाईलाल पोखरना ने विद्यालय की संक्षिप्त गतिविधियों के बारे में जानकारी दी। कार्यक्रम का संचालन मुनि मोहजीत कुमार ने किया।